अध्याय 38

पवित्रस्थान का निर्माण (भाग 3)

निवास-स्थान के निर्माण का जो विवरण 36:8 में आरम्भ हुआ उसकी समाप्ति निर्गमन 38 करता है।[1] निवास-स्थान और इसकी लकड़ी को तैयार करने का विवरण दिया जा चुका है। निवास-स्थान के आँगन और उस में पायी जाने वाली वस्तुओं के निर्माण के साथ सम्बन्ध बताने के द्वारा यह अध्याय कहानी को समाप्त करता है। यह होम बलि (38:1-7), पीतल की हौदी (38:8), और निवास-स्थान को घेरने वाले आँगन (38:9-20) के निर्माण को प्रस्तुत करता है। इस अध्याय के शेष भाग में लेखक निवास-स्थान के मूल्य की ओर संकेत करता है (38:21-31)। यह बताता है कि "निवास-स्थान के लिए जो सामान बना उसका विवरण इस प्रकार है" (38:21), जो स्वेच्छा बलि में एकत्रित किया गया (38:24) और जिनकी गिनती की गई उनसे प्राप्त कर से प्राप्त किया गया (38:25)।

पीतल की वेदी (38:1-7)

[1]फिर उसने बबूल की लकड़ी की होमवेदी भी बनाई; उसकी लम्बाई पाँच हाथ और चौड़ाई पाँच हाथ की थी; इस प्रकार से वह चौकोर बनी, और ऊँचाई तीन हाथ की थी। [2]उसने उसके चारों कोनों पर उसके चार सींग बनाए, वे उसके साथ बिना जोड़ के बने; और उसने उसको पीतल से मढ़ा। [3]और उसने वेदी का सारा सामान, अर्थात् उसकी हांड़ियों, फावड़ियों, कटोरों, काँटों, और करछों को बनाया। उसका सारा सामान उसने पीतल का बनाया। [4]और वेदी के लिये उसके चारों ओर की कंगनी के तले उसने पीतल की जाली की एक झंझरी बनाई, वह नीचे से वेदी की ऊँचाई के मध्य तक पहुँची। [5]उसने पीतल की झंझरी के चारों कोनों के लिये चार कड़े ढाले, जो डण्डों के खानों का काम दें। [6]फिर उसने डण्डों को बबूल की लकड़ी का बनाया और पीतल से मढ़ा। [7]तब उसने डण्डों को वेदी के किनारों के कड़ों में वेदी के उठाने के लिये डाल दिया। वेदी को उसने तख़्तों से खोखली बनाया।

आयतें 1-7. 27:1-8 में दिए गए निर्देशों के अनुसार **धूप वेदी** का निर्माण का

कार्य पूरा किया गया। इस वेदी को तैयार करने के लिए जिस व्यक्ति का वर्णन सर्वनाम **वह** की पहचान के साथ किया गया है वह बसलेल है। 37:1 के आरम्भ के साथ ही पाठ्य ऐसा बताता है कि बसलेल ने निवास-स्थान, भेंट की रोटियों की मेज़, दीवट और धूप वेदी तैयार की; यहाँ ऐसा संकेत दिया गया है कि उसने होमवेदी भी तैयार की। इन कथनों के विषय के बारे में वास्तविक रूप से देखा जाए तो ऐसा आवश्यक नहीं था कि प्रत्येक कार्य में बसलेल ही कारीगर रहे। अन्य बुद्धिमान भी उसकी सहायता के लिए नियुक्त किए गए थे (35:10-19)। बसलेल ने सब कुछ **तैयार** किया इसका अर्थ यह कि उसने इनके निर्माण का निरीक्षण किया। वेदी को तैयार करने के लिए दिए गए निर्देश और उन निर्देशों का पालन किए जाने के विवरण के मध्य कोई विशेष महत्वपूर्ण अन्तर नहीं हैं। (27:1-8 पर टिप्पणियाँ देखें।)

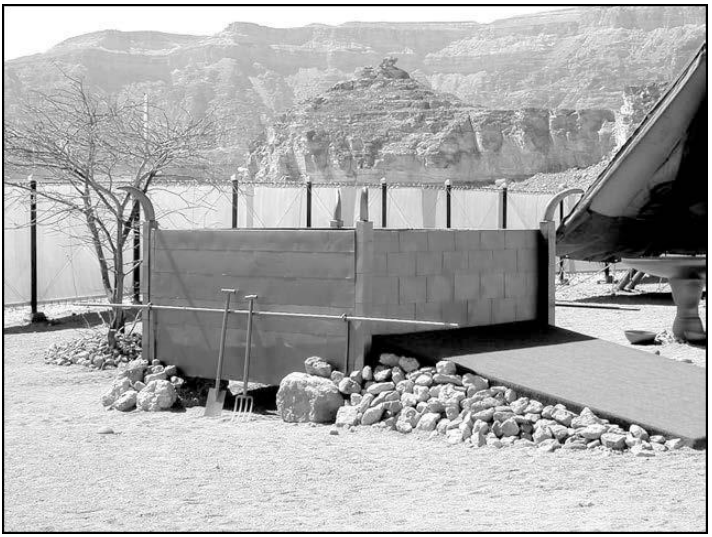

पीतल की वेदी का प्रतिरूप (तिम्ना पार्क, इस्राएल)

पीतल की हौदी (38:8)

[8]उसने हौदी और उसका पाया दोनों पीतल के बनाए, यह मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली महिलाओं के पीतल के दर्पणों से बनाए गए।

आयत 8. हौदी को बनाने के विवरण के लिए मात्र एक वाक्य की ही आवश्यकता है। इसके निर्माण के निर्देश (30:17-21), अभिषेक के तेल के विषय में दिए गए निर्देशों को छोड़, निवास-स्थान के निर्माण के विषय में मूसा को दिए निर्देशों में निर्णायक निर्देश थे।

यहाँ पर दिए गए दो पदों के मध्य एक महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि 38:8

कहता है कि हौदी का निर्माण **मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली महिलाओं के पीतल के दर्पणों से** किया गया। पुराना नियम इस प्रकार की महिलाओं का वर्णन एक अन्य अवसर पर भी करता है: 1 शमूएल 2:22 में पाठ्य कहता है कि एली के पुत्र "मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली स्त्रियों के संग कुकर्म करते हैं।"

ये स्त्रियाँ कौन थी और वे किस प्रकार "सेवा" करती थी यह अस्पष्ट है। इब्रानी शब्द (צָבָא, *ट्सबा')* ऐसा सुझाता है कि जो सेवा वे करती थी उसी के लिए उनका गठन किया गया; इस शब्द का प्रयोग लेवीय याजकों की "सेवा" के लिए भी किया गया है (गिनती 4:23; 8:24)।[2] टीकाकारों ने यह सुझाव दिया है कि वे सम्भावित रूप से निवास-स्थान के आँगन की देखभाल करने के लिए सफ़ाई करने वाली, धार्मिक उत्सवों पर गायिकाओं और नृत्य के द्वारा प्रस्तुति देने वाली (देखें 15:20, 21), अथवा चौकीदार के रूप में महिलाओं का एक समूह रही होंगी।[3] 1 शमूएल 2:22 के कारण हो सकता है कि कुछ लोगों उनका सम्बन्ध बाल की आराधना के लिए मन्दिरों की एक पंथ विशेष की देवदासियों के साथ बताते हों। फ़िर भी इस सुझाव को अस्वीकार कर देना चाहिए क्योंकि निवास-स्थान और इसकी सेवा के लिए परमेश्वर की योजना में इस प्रकार के अभ्यास के बारे में विचार भी नहीं किया जा सकता।[4]

तल की हौदी का प्रतिरूप (तिम्ना पार्क, इस्राएल)

कुछ विद्वान ऐसा मानते हैं कि मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली महिलाओं के लिए दिए गए सन्दर्भ में तिथि और समय की अशुद्धता है। वे यह तर्क देते हैं कि निवास-स्थान को स्थापित किए जाने से पहले ही वहाँ पर इन महिलाओं के द्वारा सेवा किए जाने का वर्णन किया गया है जिसके कारण यह कथन इतिहास

से बाहर की बात लगता है।।[5] इस कठिनाई के लिए उपयुक्त उपाय यह है कि ये महिलाएँ, मूसा के द्वारा प्रयोग में लिए जाने वाले "मिलापवाले तम्बू" में (33:7) अपने दर्पणों को भेंट स्वरूप चढ़ा देने से पहले सेवा करती थी। तब, निवास-स्थान को स्थापित करने के बाद वे उसी क्षमता के साथ वहाँ पर भी सेवा करती रहीं।

"दर्पण," वर्तमान में काँच के बने होते हैं, वे प्राचीन समय में चमकीली धातु से बने होते थे जो उन्हें मूल्यवान बनाती थी। फ़्रेडरिक डब्ल्यू डेंकर ने इस प्रकार के दर्पणों के लिए यह विवरण दिया: "कुछ दर्पण मात्र गोल सतह से बने हुए थे, कुछ में दस्ते लगे हुए थे जो प्रायः एक महिला के आकार में बनाए जाते थे; कुछ की बनावट चौकी के समान थी जिन्हें लकड़ी के सामान पर खड़ा रखा जा सकता था।"[6] सेवा करने वाली महिलाओं के द्वारा इन दर्पणों को भेंट स्वरूप चढ़ा देना सम्भावित रूप से एक विशाल बलिदान का प्रतिनिधित्व करता था। सम्भावित रूप से यही कारण है कि उनका अंशदान एक विशेष महत्व के साथ मूल्य रखता है।

निवास-स्थान का आँगन (38:9-20)

[9]फिर उसने आँगन बनाया; और दक्षिण की ओर के लिये आँगन के परदे बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के थे, और सब मिलाकर सौ हाथ लम्बे थे; [10]उनके लिये बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस कुर्सियाँ बनीं; और खम्भों की घुंडियाँ और जोड़ने की छड़ें चाँदी की बनीं। [11]और उत्तर की ओर के लिये भी सौ हाथ लम्बे परदे बने; और उनके लिये बीस खम्भे, और इनकी पीतल की बीस ही कुर्सियाँ बनीं, और खम्भों की घुंडियाँ और जोड़ने की छड़ें चाँदी की बनीं। [12]और पश्चिम की ओर के लिये सब परदे मिलाकर पचास हाथ के थे; उनके लिये दस खम्भे और दस ही उनकी कुर्सियाँ थीं, और खम्भों की घुंडियाँ और जोड़ने की छड़ें चाँदी की थीं। [13]और पूरब की ओर भी वह पचास हाथ के थे। [14]आँगन के द्वार के एक ओर के लिये पंद्रह हाथ के परदे बने; और उनके लिये तीन खम्भे और तीन कुर्सियाँ थीं। [15]और आँगन के द्वार के दूसरी ओर भी वैसा ही बना था; और आँगन के दरवाजे के इधर और उधर पंद्रह पंद्रह हाथ के परदे बने थे; और उनके लिये तीन ही तीन खम्भे, और तीन ही तीन इनकी कुर्सियाँ भी थीं। [16]आँगन के चारों ओर सब परदे सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के बने हुए थे। [17]और खम्भों की कुर्सियाँ पीतल की और घुंडियाँ और छड़ें चाँदी की बनीं, और उनके सिरे चाँदी से मढ़े गए, और आँगन के सब खम्भे चाँदी की छड़ों से जोड़े गए थे। [18]आँगन के द्वार के परदे पर बेल बूटे का काम किया हुआ था, और वह नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े के बने थे; और उसकी लम्बाई बीस हाथ की थी, और उसकी ऊँचाई आँगन की कनात की चौड़ाई के समान पाँच हाथ की बनी। [19]और उनके लिये चार खम्भे, और खम्भों की चार ही कुर्सियाँ पीतल की बनीं, उनकी घुंडियाँ चाँदी की बनीं, और उनके सिरे चाँदी से मढ़े गए, और उनकी छड़ें चाँदी की बनीं। [20]और निवास और आँगन के चारों ओर के सब खूँटे पीतल के बने थे।

आयतें 9-20. अगर ऐसा कहा जाए कि यह पद आँगन के निर्माण के बारे में है तो यह गलत दिशा की ओर जाने के समान होगा। जब निवास-स्थान एक दीवार से घेर लिया गया तब निवास-स्थान के आस-पास का सम्पूर्ण क्षेत्र निवास-स्थान बन गया। निर्गमन 27:9-19 उस दीवार के निर्माण के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करता है जबकि 38:9-20 यह बताता है कि इन निर्देशों का पालन किस प्रकार किया गया। अध्याय 38 में इसके निर्माण का विवरण, पूर्व में दिए गए निर्देशों से महत्वपूर्ण तरीके से अन्तर नहीं रखता। एक हल्का अन्तर मात्र इस बात पर बल देता है कि बाद का पद, पूर्व के पद का एक सटीक प्रतिरूप मात्र नहीं है। (27:9-19 पर टिप्पणियाँ देखें।)

आँगन को बनाने के कार्य की समाप्ति के साथ ही, जिसमें होमवेदी और हौदी स्थापित की गई, निवास-स्थान के निर्माण का कार्य समाप्त हो गया।

निवास-स्थान की लागत (38:21-31)

आगे, पाठ्य निवास-स्थान की लागत के बारे में सूचना उपलब्ध करवाता है। यह उन लोगों के साथ आरम्भ होता है जिन्होंने भेंटें एकत्रित करने में अथवा निवास-स्थान के निर्माण में अगुवाई की (38:21-23) और तब यह बताता है कि कितना दिया गया और इसका प्रयोग किस प्रकार किया गया (38:24-31)।

अगुवे (38:21-23)

[21]साक्षीपत्र के निवास का सामान जो लेवियों के सेवाकार्य के लिये बना, और जिसकी गिनती हारून याजक के पुत्र ईतामार के द्वारा मूसा के कहने से हुई थी, उसका विवरण यह है। [22]जिस जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसको यहूदा के गोत्रवाले बसलेल ने, जो हूर का पोता और ऊरी का पुत्र था, बना दिया। [23]और उसके संग दान के गोत्रवाले, अहीसामाक का पुत्र, ओहोलीआब था, जो नक्काशी करने और काढ़नेवाला और नीले, बैंजनी और लाल रंग के और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कढ़ाई करनेवाला निपुण कारीगर था।

आयत 21. पुस्तक का संग्रह करने वाले व्यक्ति का सारांश इस भाग में एक बिन्दु की घोषणा करते हुए इस वाक्य से आरम्भ होता है: जिससे जिन लोगों की **गिनती** की गई उनसे कर एक रूप में **साक्षीपत्र के निवास का जो सामान** एकत्रित किया गया उस विवरण का रिकॉर्ड रखा जा सके। परमेश्वर के द्वारा पूर्व जो आज्ञा दी थी उससे की गई गिनती के परिणामस्वरूप यह राजस्व प्राप्त हुआ (30:11-16)। कर के लिए आवश्यक धन के साथ उपलब्ध करवाया गया विवरण इस्राएलियों के द्वारा स्वेच्छा बलि में दिए गए अन्य सामान के मूल्य का भी विवरण देता है (38:24, 29)। 25:1-7 में जिस प्रकार स्वेच्छा से भेंट देने के लिए कहा गया वह 35:21-29 में और 36:3-7 में दी गई।

ईतामार के द्वारा उच्चारण संकेत देता है कि उसके दिशा निर्देश से यह विवरण

प्राप्त किया गया।[7] ईतामार हारून के पुत्रों में से एक था और वह याजक के रूप में सेवा करता था (6:23; 28:1; लैव्य. 10:6, 12, 16)। जॉन आई. डरहम ने नोट किया कि ईतामार "सूची लेने के कार्य पर अधिकारी था" और उसने गिनती 7:1-8 की ओर संकेत किया, जहाँ ईतामार को अन्य निरीक्षण कार्य पर ज़िम्मेदारी दी गई।[8]

लेवियों के सेवाकार्य के लिये उच्चारण ऐसा लगता है जैसे यह अनावश्यक रूप से यहाँ रख दिया गया हो क्योंकि अब तक निवास-स्थान के सम्बन्ध में लेवियों के कार्य का आरम्भ नहीं हुआ था। अतः कुछ विद्वान इस प्रकार निष्कर्ष निकालते हैं कि "38:21-31 इस स्थान में रखे जाने के लिए नहीं हैं अथवा ये आयतें बाद में होने वाली कुछ घटना की ओर संकेत करती हैं।"[9] फ़िर भी लेवियों ने स्वयं को पूर्व में ही अलग कर लिया था (32:26-28) और पूर्व में ही वे परमेश्वर के लिए समर्पित कर दिए गए थे (32:29)। अतः इस कारण यह अनुमान लगाना उचित है कि वास्तव में उनका सेवाकार्य आरम्भ हो चुका था - क्योंकि उन्हें, ईतामार के निरीक्षण में, निवास-स्थान के लिए दिए गए सामान का विवरण रखने का कार्य दे दिया गया था।

आयतें 22, 23. निवास-स्थान के निर्माण के लिए मुख्य ज़िम्मेदार लोगों के नाम फ़िर से यहाँ पर देखने को मिलते हैं: **बसलेल** और **ओहोलीआब**। बसलेल निवास-स्थान के निर्माण-कार्य में अगुवा था जब कि ओहोलीआब ने उसके सहायक के रूप में कार्य किया (31:1-6; 35:30-35 पर टिप्पणियाँ देखें)।

जिस मात्रा में दिया गया (38:24-31)

[24]पवित्रस्थान के सारे काम में जो भेंट का सोना लगा वह पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से उनतीस किक्कार और सात सौ तीस शेकेल था। [25]और मण्डली के गिने हुए लोगों की भेंट की चाँदी पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से सौ किक्कार और सत्रह सौ पचहत्तर शेकेल थी। [26]अर्थात् जितने बीस वर्ष के और उससे अधिक आयु के गिने गए थे, वे छः लाख तीन हज़ार साढ़े पाँच सौ पुरुष थे, और एक एक जन की ओर से पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार आधा शेकेल, जो एक बेका होता है, मिला। [27]और वह सौ किक्कार चाँदी पवित्रस्थान और बीचवाले परदे दोनों की कुर्सियों के ढालने में लग गई; सौ किक्कार से सौ कुर्सियाँ बनीं, एक एक कुर्सी एक किक्कार की बनी। [28]और सत्रह सौ पचहत्तर शेकेल जो बच गए उनसे खम्भों की घुंडियाँ बनाई गईं, और खम्भों की चोटियाँ मढ़ी गईं, और उनकी छड़ें भी बनाई गईं। [29]और भेंट का पीतल सत्तर किक्कार और दो हज़ार चार सौ शेकेल था; [30]इससे मिलापवाले तम्बू के द्वार की कुर्सियाँ, और पीतल की वेदी, पीतल की झंझरी, और वेदी का सारा सामान; [31]और आँगन के चारों ओर की कुर्सियाँ, और उसके द्वार की कुर्सियाँ, और निवास, और आँगन के चारों ओर के खूँटे भी बनाए गए।

जो मूल्यवान धातु दी गई उन्हें उनके मूल्य के साथ प्रस्तुत किया गया अर्थात बड़ी मात्रा से कम मात्रा के अनुसार, अर्थात: सोना, चाँदी और पीतल। जैसा सम्पूर्ण पवित्रस्थान पवित्र था अतः जिस सामग्री से वस्तुएँ तैयार की गईं वे उनकी पवित्रता के स्तर के अनुसार तैयार की गईं: पीतल (पवित्र), चाँदी (अधिक पवित्र), और सोना (सबसे अधिक पवित्र)।

आयत 24. प्रथम मूल्यवान धातु, **सोना**, थी जिसका प्रयोग विस्तृत रूप से **पवित्रस्थान** की पवित्र सजावट के लिए किया गया। इसके लिए प्राप्त भेंटों को **हिलाए जाने की भेंट** (תְּנוּפָה, *थेनूपाह)* के रूप में बताया गया है जो इस सन्दर्भ में "स्वेच्छा बलि" के समान लगती है। इस प्रकार की भेंट का रिकॉर्ड 35:22 में देखने को मिलता है: "क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे सब जुगनू, नथनी, मुंदरी, और कंगन आदि सोने के गहने ले आने लगे, इस भाँति जितने मनुष्य यहोवा के लिये सोने की भेंट के देनेवाले थे वे सब उनको ले आए।"

आयतें 25-28. फ़िर प्रत्येक जवान इस्राएली पुरुष के द्वारा आवश्यक कर के रूप से **चाँदी** दी गई। इस मूल्यवान धातु का प्रयोग **पवित्रस्थान और बीचवाले परदे दोनों की कुर्सियों के ढालने में** और साथ ही **खम्भों की घुंडियाँ** बनाने के लिए किया गया।

जनगणना और दी गई चाँदी की मात्रा के मध्य गणितीय सम्बन्ध का विवरण पीटर एन्स ने इस प्रकार दिया:

> लाल सागर पार करने वाले प्रत्येक इस्राएली ने एक बेका (= $^1/_2$ शेकेल) दिया। सौ किक्कार और 1,775 शेकेल 301,775 शेकेल होता है (एक किक्कार = 3000 शेकेल, अतः 100 किक्कार = 300,000 शेकेल)। जैसा कि एक बेका, शेकेल का आधा भाग है, अतः लाल सागर पार करने वाले कुल इस्राएली पुरुषों की संख्या (आयत 26 में अनुमानित "पुरुषों" को अक्षरशः लिया जाए) शेकेल की संख्या का दुगुना भाग है, अतः यह संख्या 603,550 है।[10]

यह संख्या, गिनती 1:46 में रिकॉर्ड की गई पुरुषों की जनगणना के समान है। जनगणना के लिए दिए गए निर्देशों के परिणामस्वरूप जो मात्रा दी गई इसे 30:11-16 में देखा जा सकता है। यह जनगणना निवास-स्थान के निर्माण से पूर्व की गई। गिनती 1 में ली गई गणना निवास-स्थान का कार्य पूर्ण कर लेने के एक महीने के बाद की गई। अतः अनेक महीनों के अन्तर में की गई ये दोनों जनगणनाएँ एक समान आँकड़ा प्रदान करती हैं। विल्बर फ़ील्ड्स ने यह सुझाया कि पहली जनगणना ने दूसरी जनगणना के लिए तैयार किया जो कि ऊपरी तौर पर एक ही दिन में पूरी कर ली गई।[11]

आयतें 29-31. अन्तिम मूल्यवान धातु जिसे सूचीबद्ध किया गया वह **पीतल** है, जिसका प्रयोग करके **मिलापवाले तम्बू के द्वार की कुर्सियाँ, और पीतल की वेदी, पीतल की झंझरी, और वेदी का सारा सामान; और आँगन के चारों ओर की कुर्सियाँ, और उसके द्वार की कुर्सियाँ, और निवास, और आँगन के चारों ओर के खूँटे बनाए गए**। जिस प्रकार सोने के विषय में देखने को मिलता है उसी प्रकार पीतल की भेंटों

की ओर **हिलाए जाने की भेंट** (38:24 पर टिप्पणियाँ देखें) के रूप में संकेत दिया गया है। पीतल के सामान स्वेच्छा बलि में दिए गए (35:24)।

सोना, चाँदी और पीतल की भेंटों के तौल की गणना एन्स के द्वारा की गई:

> एक किक्कार के लिए 300 शेकेल की आवश्यकता होती है। सूचीबद्ध सामग्री का औसतन तौल, वर्तमान माप के अनुसार, इस प्रकार है: 2,193.25 पौण्ड सोना, 7,544.38 पौण्ड चाँदी, 5,310 पौण्ड पीतल। एक चित्र में इसे रखने पर, मिस्र से इस्राएलियों ने जितनी मूल्यवान धातुओं के रूप में कुल तौल का जो वहन किया वह लगभग 15,000 पौण्ड था। सारांश में यह एक अत्यधिक भारी मात्रा लगती है परन्तु प्रत्येक जवान इस्राएली पुरुष के लिए यह मात्र .025 पौण्ड के लगभग ही था - अर्थात एक बहुत ही छोटा भाग। यह सुझाने की आवश्यकता नहीं है जैसा कुछ लोगों ने किया है कि तौल में दी गई यह संख्या बढ़ा-चढ़ा कर दी गई है।[12]

जिस प्रकार सोना और पीतल की भेंटें इस्राएलियों की उदारता पर बल देती हैं उसी प्रकार चाँदी उनकी आज्ञाकारिता को प्रकट करती हैं।

अनुप्रयोग

"इसका मूल्य कितना है?" (38:21-31)

इसका मूल्य कितना है? ऑस्ट्रेलिया में लोग कहते हैं, "एमा छिज़ित?" ("यह कितने का है?") यह प्रश्न निरन्तर भोजन के विषय में, कपड़े के विषय में, लकड़ी के सामान के विषय में अथवा घरों के विषय में पूछा जाता है। धर्म के विषय में भी हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए। मसीह का अनुयायी बनने का मूल्य कितना है? यीशु ने लोगों को उत्साहित किया कि वे उसके पीछे आने से पूर्व चेले होने के मूल्य की गिनती कर लें (लूका 14:28-33)। जब निवास-स्थान का कार्य पूरा हो गया तब लोगों को निश्चित रूप से जानकारी हो गई थी कि इसके निर्माण की लागत कितनी है।

निर्गमन 38:21-31 किसी लेखाकार की बही-खाते की पुस्तक के समान लगता है। निवास-स्थान के भागों के निर्माण का कार्य पूर्ण कर लिया गया था। जो कार्य रह गया था वह था याजकीय वस्त्र तैयार करना और निवास-स्थान को खड़ा करना और इसकी सजावट की वस्तुओं को उनके निश्चित स्थान में स्थापित करना। यह आवश्यक लगा कि जिन लोगों की स्वेच्छा बलि से और आधा शेकेल कर से जो वस्तुएँ प्राप्त हुई उनका विवरण दिया जाए (30:13, 14)। इस विवरण में रिकॉर्ड किया गया कि कितना सोना, चाँदी और पीतल का प्रयोग किया गया। जैसा कि चाँदी उस कर के भुगतान से प्राप्त की गई थी जो उन सब पुरुषों से प्राप्त की गई जिनके लिए यह निर्धारित था, यह विवरण यह भी संकेत करता है कि जनगणना में कुल कितने पुरुषों की गणना की गई: 603,550 (38:26)।

जब यह गणना की गई तब सम्भावित रूप से यह बही खातों का हिसाब बताने

वाले किसी व्यक्ति की रिपोर्ट के समान थी; इसने यह प्रकट किया कि जो कुछ दिया गया उसका प्रयोग सही प्रकार से किया गया। वे लोग जिन्होंने इन शब्दों को बाद में पढ़ा उनके लिए इस पद ने लोगों की उदारता पर बल देने का कार्य किया। इसने निवास-स्थान के मूल्य और महत्व को भी प्रकट किया।

इसका मूल्य कुछ भी नहीं है। वर्तमान में मसीही व्यक्ति बनने का मूल्य क्या है? एक अर्थ में, इसका मूल्य कुछ भी नहीं है। यह कहने का अर्थ यह नहीं है कि उद्धार का कोई मूल्य नहीं है। इसके लिए मसीह ने अपना प्राण दिया - अर्थात उसे इस पृथ्वी पर आना पड़ा, पीड़ा का एक जीवन जीना पड़ा और क्रूस पर अपना प्राण अर्पित करना पड़ा। उसने कलीसिया को "स्वयं के लहू से" (प्रेरितों. 20:28; देखें इफ़ि. 5:25) खरीदा। यीशु ने "बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण" (मत्ती 20:28) दिया। हमें पाप से मुक्त करने के लिए परमेश्वर के न्याय के द्वारा माँगा गया छुड़ौती का दाम चुकाया। परिणामस्वरूप अब उद्धार हमारे लिए मुफ़्त है (प्रका. 22:17); यह एक दान है (रोमियों 6:23)। मसीह ने हमारे उद्धार के लिए मूल्य चुका दिया।

इसके लिए बहुत मूल्य चुकाना पड़ता है। एक अर्थ में, इसके लिए बहुत मूल्य चुकाना पड़ता है। जब यीशु ने लूका 14 में चेले होने के मूल्य की गणना करने के बारे में कहा तब उसने स्पष्ट रूप से संकेत दिया कि चेला होने के लिए एक मूल्य चुकाना पड़ता है। इसका मूल्य कितना है? एक जवान धनी शासक की कहानी इस प्रश्न का उत्तर देती है। यीशु ने उससे कहा, "जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले" (मरकुस 10:21)। यह जवान धनी शासक सब लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। जो कोई मसीह के पीछे आना चाहता है उसके लिए यह आवश्यक है कि वह मसीह का चेला बनने के प्रति मार्ग में आने वाली प्रत्येक वस्तु का त्याग करने के लिए तैयार रहें।

यीशु को सब कुछ देने का अर्थ है कि उसकी आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता में हम स्वयं को उसे दे देते हैं। उद्धार मुफ़्त है। यह एक दान है, परन्तु यह एक ऐसा दान हे जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए। इसे हम तब स्वीकार करते हैं जब हम यीशु में विश्वास करते हैं और अपने पापों के लिए पश्चात्ताप करने के लिए उस पर भरोसा करते हैं, उसके नाम का अंगीकार करने के लिए और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हैं। इससे हम मसीह की योग्यता के साथ समान योग्यता में नहीं आ जाते; हम कभी भी उस उद्धार के अधिकारी नहीं हो सकते थे जो वह उपलब्ध करवाता है। हम कृतज्ञता से उस उद्धार तक पहुँचते हैं जिसका प्रस्ताव वह मुफ़्त रूप से हमारे सम्मुख रखता है।

क्या मसीही व्यक्ति होने के लिए हमें बहुत अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है? क्या स्वयं के भाग के रूप में हम इसके बारे में अन्य लोगों को बताने का काम कर रहे हैं अथवा स्वयं बिना कोई मूल्य चुकाए अन्य लोगों के द्वारा जो हमें उपलब्ध करवाया गया उसका आनन्द ले रहे हैं? कलीसिया के लिए यीशु को अपना जीवन बलिदान करना पड़ा। लहू के द्वारा खरीदी गई उस देह के कारण को आगे अन्य लोगों को बताने के लिए हम कितनी इच्छा रखते हैं?

हमें एक ईतामार की आवश्यकता है! (38:21-31)

प्रत्येक कलीसिया और प्रत्येक अच्छे कार्य को एक ईतामार की आवश्यकता है! प्रत्येक वह कार्य जिसमें धन अथवा सामग्री का दान करना शामिल है उसमें एक ईतामार की अर्थात एक अच्छे लेखा रखने वाले की आवश्यकता है। दान स्वरूप जो धन प्राप्त किया जाता है उसका विवरण इस प्रकार रखा जाए जो यह प्रस्तुत करे कि जो धन प्राप्त किया गया वह उसी प्रकार खर्च किया गया जैसा उस धन के लिए सोचा गया था और उसमें से कुछ भी धन व्यर्थ खर्च नहीं किया गया और न ही किसी गलत काम उसे लगाया गया। पौलुस "इस बात में चौकस था जिससे इस उदारता के काम के विषय में जिसकी सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाने पाए। क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उनकी चिन्ता करते हैं" (2 कुरि. 8:18-21)। हम सब में इसी प्रकार की चौकसी देखी जाए।

बड़ी लागत का निवास-स्थान और वर्तमान में इसका महत्व (38:21-31)

निवास-स्थान बहुत अधिक लागत से बना हुआ था यह सच्चाई वर्तमान में क्या मसीही लोगों को उचित ठहराती है कि वे महँगी जीवन-शैली का अथवा आरामदायक चर्च भवन का निर्माण करें? (1) महँगी जीवन-शैली के विषय में हम क्या कहेंगे? मसीही लोगों को यह समझने की आवश्यकता है कि बाइबल उनसे समृद्धि का वायदा नहीं करती। आगे हो सकता है कि कुछ मसीही लोग धनवान बन जाएँ (1 तीमु. 6:17), इसका अर्थ यह है कि वे धन के लोभ में फँस जाएँ (1 तीमु. 6:9, 10)। प्रत्येक चेले को चाहिए कि वह स्वयं को और अपनी वस्तुओं को - फ़िर चाहे वे थोड़ी हों अथवा अधिक - परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करें।

(2) आरामदायक चर्च भवन के विषय में हम क्या कहेंगे? बाइबल कलीसिया की इमारतों के विषय में शान्त है। परमेश्वर का काम करने के लिए अनावश्यक भव्य इमारतों के निर्माण के लिए निवास-स्थान को एक बहाने के रूप में काम में नहीं लेना चाहिए। फ़िर भी निवास-स्थान सुझाता है कि सुन्दर इमारतों का निर्माण करने में कोई बुराई नहीं है जो कि कार्यशील हों।

समाप्ति नोट्स

[1]यह टिप्पणी याजकीय वस्त्रों को बनाने को सम्मिलित नहीं करती जिसके बारे में अध्याय 39 में बताया गया है। [2]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 3 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 487. [3]डरहम, 487, और आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इन्ट्रोडक्शन एन्ड कमेन्ट्री*, टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इल्ल.: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 236 में इन स्त्रियों की भूमिका के विषय में अलग-अलग सुझावों पर विचार-विमर्श किया गया है। [4]कोल, 236. [5]उदाहरण के लिए, देखें जे. फ़िलिप हयात, *एक्सोडस*, द न्यु सेन्चुरी बाइबल कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1971), 330. [6]*द इन्टरनेशनल स्टेन्डर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडिया*, रेवलेशन एड., एड. जिओफ़्रे डब्ल्यु. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:382 में फ़्रेडरिक डब्ल्यु. डेंकर, "मिरर।" इस

लेख के पास एक पीतल का मिस्री दर्पण है. [7]पीटर एन्स, *एक्सोडस*, द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2000), 548. [8]डरहम, 489-90. [9] डब्ल्यु. एच. जिस्पेन, *एक्सोडस*, ट्रान्स. एड वेन डेर मास, बाइबल स्टूडेन्ट्'स कमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेन्सी रेफ़रेन्स लाइब्रेरी, जोनडर्वन पब्लिशिंग हाऊस, 1982), 327. [10]एन्स, 549, एन. 55.

[11]विल्बर फ़ील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1976), 789-90. [12]एन्स, 548-49. इसी प्रकार की गणना के लिए *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 2, *जेनेसिस-नम्बर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 1990), 495 में देखें वॉल्टर सी. कैसर, जुनियर, "एक्सोडस।"